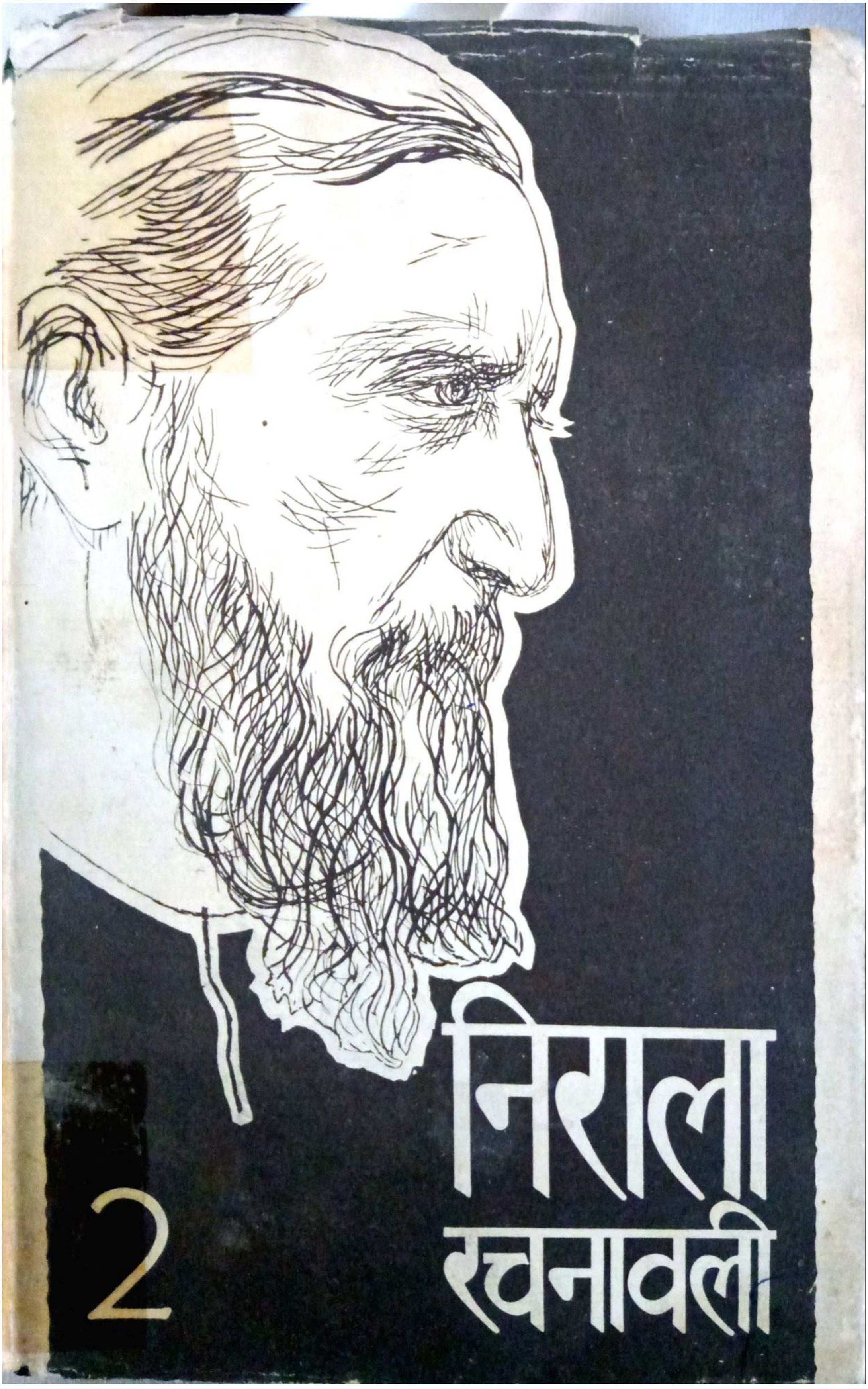

Scanned by TapScanner

क्रम

कविताएँ (1939-1949)

पहला दौर

प्रेम-संगीत 29
जन-जन के जीवन के सुन्दर 29
सुन्दर हे, सुन्दर ! 30
तुम्हें चाहता वह भी सुन्दर 31
रानी और कानी 32
उन चरणों में मुझे दो शरण 33
दलित जन पर करो करुणा 33
भाव जो छलके पदों पर 34
बापू के प्रति 34
भगवान् बुद्ध के प्रति 35
मास्को डायेलाग्स 36
धूलि में तुम मुझे भर दो 37
तुम और मैं 38
आदरणीय प्रसादजी के प्रति 39
गर्म पकौड़ी 41
मैं अकेला 42
मैं बैठा था पथ पर 43
श्रद्धांजलि 43
कुकुरमुत्ता 44
खजोहरा 57
नूपुर के सुर मन्द रहे 62
बादल छाये 63
उद्‌बोधन 64
अज्ञता 67
स्फटिक-शिला 67
तुम आये 75
गहन है यह अन्ध कारा 76
द्रुम-दल शोभी फुल्ल नयन ये 76
खेल 77
सन्त कवि रविदासजी के प्रति 78
सहस्राब्दि 78
अखिल-भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन की सभानेत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित के प्रति 82
घेर लिया जीवों को··· 83
स्नेह-निर्झर बह गया है 84
मत्त हैं जो प्राण 84
मरण को जिसने वरा है 85
जननि मोहमयी तमिस्रा··· 86
तुम्हीं हो शक्ति समुदय की 86
यह है बाजार 87
भारत ही जीवन-धन 88
युग-प्रवर्तिका श्रीमती महादेवी वर्मा के प्रति 89
स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज 89
जवाहरलाल ! 104
गया अँधेरा 105
स्नेह-मन तुम्हारे नयन बसे 106
नाम था प्रभात ज्ञान का साथी 106
मेरे घर के पश्चिम ओर रहती है 107
सड़क के किनारे दूकान है 107
निशा का यह स्पर्श शीतल 108
तुम चले ही गये प्रियतम 109
चूँकि यहाँ दाना है 109
जलाशय के किनारे कुहरी थी 110

दूसरा दौर

तिलांजलि 113
पाँचक 113
आँख आँख का काँटा हो गयी 116
खुश-खबरी 117
शशी वे थे, शश-लांछन 117
जीवन-प्रदीप चेतन तुमसे हुआ हमारा 118

Scanned by TapScanner

उनके बाग में बहार 118
टूटी बाँह जवाहर की 119
महालक्ष्मी के प्रति 120
शुभ्र आनन्द आकाश पर छा गया 122
रूप की धारा के उस पार 122
बीन की झंकार··· 123
नाथ, तुमने गहा हाथ··· 124
बातें चलीं सारी रात तुम्हारी 124
साथ न होना। गाँठ खुलेगी··· 125
आये पलक पर प्राण कि 125
भीख माँगता है अब राह पर 126
जिसको तुमने चाहा··· 127
चलते पथ, चरण वितत 127
आरे, गंगा के किनारे 128
वेश-रूखे, अधर सूखे 129
तू के झोंकों··· 129
बदलीं जो उनकी आँखें··· 130
दोनों लताएँ··· 130
संकोच को विस्तार··· 131
काले-काले बादल छाये··· 132
मिट्टी की माया छोड़ चुके 132
गिराया है जमीं होकर 133
चढ़ी हैं आँखें जहाँ की··· 134
किनारा वह हमसे··· 134
विनोद प्राण भरे 135
पड़े थे नींद में··· 135
शान्ति चाहूँ मैं··· 136
पग आँगन पर रखकर आयी 136
समर करो जीवन में 137
खुल गया दिन खुली रात 137
रहे चुपचाप मन मारकर हाथ पर 138
राह पर बैठे··· 138
आँखें वे देखी हैं जबसे 140
स्वर के सुमेरु से झर-झर कर 140
कैसे गाते हो ?··· 141
खिला कमल, किरण पड़ी 142
कुन्द-हास में अमन्द 142
फूलों के कुल काँटे··· 143
उठकर छवि से आता है पल 144
हँसी के तार के होते हैं ये··· 145
हँसी के झूले के झूले हैं वे··· 145
अशब्द हो गयी वीणा 146
तुम्हें देखा··· 146
निगह तुम्हारी थी 147
छाये आकाश में··· 147
स्नेह की रागिनी बजी 148
अपने को दूसरा न देख 148
किरणें कैसी-कैसी फूटीं 149
कहाँ की मित्रता 150
नये विचार के संसार में 150
प्रभु के नयनों से··· 151
आये हो आस के··· 151
फूल से चुन लिया··· 152
बन्दीगृह वरण किया··· 152
मन में आये संचित होकर 153
बाहर मैं कर दिया गया हूँ 153
आने-जाने से पहले··· 154
सबसे तुम छूटे और··· 154
मृत्यु है जहाँ··· 155
क्या दुःख, दूर कर दे बन्धन 156
तू कभी न ले दूसरी आड़ 156
छला गया, किरनों का··· 157
वह चलने से तेरे··· 157
मुसीबत में कटे हैं दिन 158
नहीं देखे हैं पर केवल··· 159
अगर तू डर से पीछे··· 160
आँख के आँसू न शोले बन गये 160
भेद कुल खुल जाय वह 161
विजयी तुम्हारे··· 162
जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ 162
राजे दिनकर जैसे 163
जग के, जय के, जीवन 164
प्रतिजन को करो सफल 164
साधना आसन हुई··· 165
तुमसे (मिले) मेरे प्राण 165
अन्तस्तल से यदि की पुकार 166

Scanned by TapScanner

ऐंड़ ली, तिरछी छबि की मान 167
आये नतवदन शरण 167
अति सुकृत भरे 168
सहज चाल चलो उधर 168
आँख से आँख मिलाओ 169
वही राह देखता हूँ 169
बिना अमर हुए··· 170
साहस कभी न छोड़ा 171
किसकी तलाश में हो··· 171
सारे दावपेच खुले··· 172
अगर समस्त-पदों का··· 172
माया की गोद, खेलता है 173
यह जीने का संग्राम 173
मन हमारा मग्न दुख की 174
तुम हो गतिवान जहाँ 174
उन्हें न देखूंगा जीवन में 175
अहरह तुम्हारे न जो प्राण··· 176
कैसी यह हवा चली 176
थोड़ों के पेटे में बहुतों को आना पड़ा 177
राजे ने अपनी रखवाली की 177
दग़ा की 178
चर्खा चला 179
तारे गिनते रहे 180
कुत्ता भौंकने लगा 181
झींगुर डटकर बोला 182
देवी सरस्वती 183
युगावतार परमहंस श्री रामकृष्णदेव के प्रति 192
छलाँग मारता चला गया 193
डिप्टी साहब आये 194
वर्षा 196
महगू महगा रहा 197
खून की होली जो खेली 199
कैलाश में शरत् 200
गीत (रचना की ऋजु बीन बनीं तुम) 204
गीत (कमरख की आँखें भर आईं) 204
मेघ मल्लार (1) 205
मेघ मल्लार (2) 205
गीत (उमड़-घुमड़-घन सावन आये) 206
गीत (छाये बादल काले काले) 206
गीत (रस की बूंदें बरसो, नव घन) 207
यह गाढ़ तन, आषाढ़ आया 207
बिजली का जीवन 208
गीत (सौरभ के रसभ बसो जीवन) 209
गीत (क्यों निर्जन में हो) 209
वन्दना 210
गगन वीणा बजी 210
शरत् पंकजलक्षणा 211
मन मधु बन, आली ! 211
गीत (शंकाकुल निशा गयी) 212
ज्ञान की तेरी तुरी है 213

परिशिष्ट

मौलिक और अनूदित कविताएँ

माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित के प्रति 219
चौथी जुलाई के प्रति 220
काली माता 221
रामायण (विनय-खण्ड) 223

भूमिकाएँ और समर्पण

1 **कुकुरमुत्ता** के प्रथम संस्करण का समर्पण 323
2 **कुकुरमुत्ता** के प्रथम संस्करण की भूमिका 323
3 **कुकुरमुत्ता** के द्वितीय संस्करण का समर्पण 324
4 **कुकुरमुत्ता** के द्वितीय संस्करण की भूमिका 324
5 **अणिमा** का समर्पण 325
6 **अणिमा** की भूमिका 325

Scanned by TapScanner

7 **बेला** का समर्पण 326
8 **बेला** की भूमिका 326
9 **नये पत्ते** का समर्पण 327
10 **नये पत्ते** की भूमिका 327

कविताएँ (1950-1961)

1 भव-अर्णव की तरणी तरुणा 331
2 तन की, मन की,
धन की हो तुम 331
3 भज, भिखारी, विश्वभरणा 332
4 समझा जीवन की विजया हो 333
5 पंक्ति-पंक्ति में मान तुम्हारा 333
6 दुरित दूर करो नाथ 334
7 भव-सागर से पार करो हे 334
8 रमण मन के, मान के तन 335
9 बन जाय भले शुक की उक से 336
10 लगी लगन, जगे नयन 336
11 शिशिर की शर्वरी 337
12 आशा-आशा भरे 337
13 गत शत पथ पर 338
14 छाँह न छोड़ी 339
15 साधो मग डगमग पग 339
16 सोयीं अखियाँ 340
17 तिमिरदारण मिहिर दरसो 340
18 तुम जो सुथरे पथ उतरे हो 341
19 जिनकी नहीं मानी कान 342
20 दीप जलता रहा 342
21 आँख लगायी 343
22 दो सदा सत्संग मुझको 343
23 चंग चढ़ी थी हमारी 344
24 नयन नहाये 345
25 रंग भरी किस अंग भरी हो 345
26 सरल तार, नवल गान 346
27 पार संसार के 347
28 प्रथम बन्दूं पद विनिर्मिल 347
29 पैर उठे, हवा चली 348
30 और न अब भरमाओ 349
31 दे न गये बचने की 349
32 अलि की गूंज चली द्रुम-कुंजों 350
33 आज प्रथम गायी पिक पंचम 350
34 फूटे हैं आमों में बौर 351
35 खेलूंगी कभी न होली 351
36 प्यास लगी है, बुझाओ 352
37 केशर की, कलि की पिचकारी 353
38 बाँधो न नाव इस ठाँव, बन्धु 353
39 गिरते जीवन को उठा दिया 354
40 धीरे-धीरे हँसकर आयीं 354
41 निविड़ विपिन, पथ अराल 355
42 सुर तरु वर शाखा 355
43 तुम ही हुए रखवाल 356
44 वेदना बनी 357
45 आँख बचाते हो 357
46 हरि का मन से गुणगान करो 358
47 खुलकर गिरती है 358
48 नव तन कनक किरण फूटी है 359
49 घन तम से आवृत धरणी है 360
50 नव जीवन की बीन बजायी 360
51 पाप तुम्हारे पाँव पड़ा था 361
52 तन, मन, धन वारे हैं 361
53 वे कह जो गये
कल आने को 362
54 क्यों मुझको तुम
भूल गये हो ? 362
55 तुमसे जो मिले नयन 363
56 वन-वन के झरे पात 364
57 मानव का मन
शान्त करो हे 364
58 जीवन के मधु से
भर दो मन 365
59 तुमने स्वर के आलोक-ढले 365
60 लिया दिया तुमसे मेरा था 366
61 गीत गाने दो मुझे तो 367
62 सहज-सहज कर दो 367
63 वासना-समासीना 368
64 ये दुख के दिन 369

Scanned by TapScanner

65 कुंज-कुंज कोयल बोली है 369
66 हार तुमसे बनी है जय 370
67 अट नहीं रही है 370
68 कौन गुमान करो जिन्दगी का ? 371
69 छोड़ दो, न छेड़ो टेढ़े 371
70 प्रिय के हाथ लगाये जागी 372
71 तार-तार निकल गये 372
72 लघु तटनी, तट छायीं कलियाँ 373
73 हार गयी मैं तुम्हें जगाकर 374
74 तरणि तार दो 374
75 गीत गाये हैं मधुर स्वर 375
76 हँसो अधर-धरी हँसी 376
77 कठिन यह संसार 376
78 नील जलधि जल 377
79 क्या सुनाया गीत, कोयल 377
80 भजन कर हरि के चरण, मन 378
81 अनमिल-अनमिल मिलते 378
82 मुदे नयन, मिले प्राण 379
83 जननि, मोह की रजनी 379
84 उनसे संसार 380
85 मधुर स्वर तुमने बुलाया 381
86 गवना न करा 381
87 कैसी हुई हार तेरी 382
88 तुम आये, कनकाचल छाये 382
89 खोले अमलिन जिस दिन 38
90 तू दिगम्बर, विश्व है घर 383
91 कौन फिर तुझको बरेगा 384
92 हरिण-नयन हरि ने छीने हैं 384
93 हुए पार द्वार-द्वार 385
94 पथ पर बेमौत न मर 385
95 कनक कसौटी पर कढ़ आया 386
96 साध पुरी, फिरी धुरी 386
97 पतित हुआ हूँ भव से तार 387
98 पतितपावनी, गंगे 388
99 चरण गहे थे 389
100 विपद-भय-निवारण करेगा 389
101 श्याम-श्यामा के युगल पद 390
102 काम के छवि-धाम 390
103 हे जननि, तुम तपश्चरिता 391
104 किरणों की परियाँ मुसका दीं 391
105 तुम्हारी छाँह है, छल है 392
106 माँ, अपने आलोक निखारो 392
107 चलीं निशि में तुम 393
108 तपी आतप से जो सित गात 393
109 मुक्तादल जल बरसो, बादल 394
110 गगन गगन है गान तुम्हारा 394
111 बीन वारण के वरण घन 395
112 घन आये, घनश्याम न आये 396
113 तपन से घन, मन शयन से 396
114 निर्झर केशर के शर के हैं 397
115 फूल खिले ··नयन मिले 397
116 गोरे अधर मुसकायी 397
117 कैसी सुहाई जुन्हायी 398
118 मुस्कुरा दीं रातरानी 399
119 सभी तुम्हारे जीते, हारे 399
120 दे सकाल, काल, देश 400
121 पद्मा के पद को पाकर हो 400
122 दुख के सुख जियो 401
123 धाये धाराधरधावन हे ! 401
124 आयीं कल जैसी पल 402
125 कमल-कमल, युगपदतल 402

Scanned by TapScanner

126 मरा हूँ हजार मरण 403
127 अरधान की फैल 403
128 रँग-रँग से यह गागर भर दो 404
129 छेड़ दे तार तू पुनर्वार 405
130 आज मन पावन हुआ है 405
131 सुख के दिन भी याद तुम्हारी 406
132 कृष्ण कृष्ण राम राम 406
133 ऊर्ध्व चन्द्र, अधर चन्द्र 407
134 कामरूप, हरो काम 407
135 हार गया 408
136 द्वार पर तुम्हारे 408
137 नील नील पड़ गये प्राण वे 409
138 छोटा है तो जी छोटा कर 409
139 साँझ के माझ के प्राण-धन 410
140 राम के हुए तो बने काम 410
141 विपदा हरण हार हरि हे 411
142 दुखता रहता है अब जीवन 411
143 ओस पड़ी, शरद् आयी 412
144 मेरी सेवा ग्रहण करो हे 413
145 जब तू रचना में हँस दी 413
146 हिम के आतप के तप झुलसो 414
147 नहीं रहते प्राणों में प्राण 414
148 दुख हर दे, जल-शीतल सर दे 415
149 सुख का दिन डूबे डूब जाय 415
150 छलके छल के पैमाने क्या 416
151 सूने हैं साज आज 416
152 (जब) हाय समायी है 417
153 हे मानस के सकाल ! 417
154 मारकर हाथ भव-वारिधि तरो 418
155 सत्य पाया जहाँ जग ने 418
156 बाँधो रस के निर्झर 419
157 मेरा फूल न कुम्हला पाये 419
158 पालो तुम सकल शकल 420
159 तप के बन्धन बाँधो 420
160 जावक-जय चरणों पर छायी 421
161 पल-प्रकाश को शाश्वत कर 421
162 पार-पारावार जो है 422
163 बात न की तो क्या बन आती ? 422
164 मानव के तन केतन फहरे 423
165 नील नयन, नील पलक 423
166 मन का समाहार 424
167 हँसो मेरे नयन 424
168 अशरण-शरण राम 425
169 जीकर जो प्राण न मार सके 425
170 तुमसे लाग लगी जो मन की 426
171 हरि-भजन करो भू-भार हरो 426
172 दुख भी सुख का बन्धु बना 427
173 काल स्रोत में मेरे प्रियजन 427
174 ज्योति प्रात, ज्योति रात 428
175 नाचो हे, रुद्र ताल 428
176 नहीं घर-घर गेह अब तक 429
177 सीधी राह मुझे चलने दो 429
178 अभय शंख बजा तुम्हारा 430
179 कुंजों की रात प्रभात हुई 430
180 चल समीर, चल कलिदल 431
181 वही चरण शरण बने 431
182 लो रूप, लो नाम 432
183 भग्न तन, रुग्ण मन 432
184 वन-उपवन खिल आयीं कलियाँ 433
185 रँगे जल के फलक 433
186 भवन, भुवन हो गया 434
187 छोटी तरणी 434
188 जय अजेय, अप्रमेय 435
189 रहते दिन दीन शरण भज ले 435

Scanned by TapScanner

190 तिमिर हरण तरणितरण··· 436
191 बाँसुरी जो बजी 436
192 सजी क्या तन तुम्हारे लिए हे प्रमन 437
193 ऊँट-बैल का साथ हुआ है 437
194 मानव जहाँ बैल घोड़ा है 438
195 खेत जोतकर घर आये हैं 438
196 महकी साड़ी 439
197 जैसे जोबन 439
198 बान कूटता है 440
199 भरी तन की भरण 440
200 रमणी न रमणीय 441
201 खिरनी के पेड़ के तले 441
202 आँखें जहाँ प्रेमिका की थीं 442
203 मन न मिले न मिले हरि के पद 442
204 क्षीण भी छाँह तुमने छीनी 443
205 आँख-अधर रँग भर गये हैं 443
206 रँग गये साँवले नयन अली के 444
207 बुझी दिल की न लगी मेरी 444
208 पारस, मदन हिलोर न दे तन 445
209 शाप तुम्हारा··· 445
210 वरद हुई शारदाजी हमारी 446
211 फेर दी आँख जी आया 446
212 बौरे आम कि भौंरे बोले 447
213 कूची तुम्हारी फिरी कानन में 447
214 प्राण तुम पावन-सावन गात 448
215 श्याम-गगन नव-घन मँडलाये 448
216 बढ़-बढ़कर बहती पुरवाई 449
217 जिधर देखिए, श्याम विराजे 449
218 बादल रे, जी तडपे 450
219 आओ आओ, वारिदवन्दन 450
220 गगन मेघ छाये 451
221 केश के मेचक मेघ छुटे 451
222 जी में न लगी जो विकल प्यास 452
223 पड़ी चमेली की माला कल 452
224 रूपक के रथ रूप तुम्हारा 453
225 नख सिख लिखे-लिखे 453
226 स्वर में छायानट भर दो 454
227 धिक मनस्सब, मान, गरजे बदरवा 454
228 फिर नभ घन घहराये 455
229 खेल सिखी अखियाँ 455
230 फिर उपवन में खिली चमेली 456
231 शुभ्र शरत् आयी अम्बर पर 456
232 मालती खिली, कृष्ण मेघ की 457
233 भर गया जुही के गन्ध पवन 457
234 प्यासे तुमसे भरकर हरसे 458
235 सरसि सलिल कहता 458
236 मधुर मधुर, मृत्यु मधुर 459
237 प्यार की थाती यह पाती 460
238 शरत की शुभ्र गन्ध फैली 460
239 समझे मनोहारि वरण जो हो सके 461
240 यह जी न भरा तुमसे मेरा 461
241 रहो तुम 462
242 सभी लोगों में योग-ध्यान बने··· 463
243 नयी ज्यातियाँ पायीं··· 463
244 कैसे नये तने··· 463
245 तेरी पानी भरन जानी है··· 464
246 ये बालों के बादल छाये 464
247 बरसो मेरे आँगन, बादल 465
248 फिर बेले में कलियाँ आयीं 466

Scanned by TapScanner

249 जय तुम्हारी देख भी ली 466
250 सुख के सारे साज तुम्हारे 467
251 वारि वन वनवारि 468
252 तुम्हारी हवा से सोये 468
253 काँपे जीवन के जीर्ण याम 469
254 गूंजे नभ-नभ घन के गर्जन 469
255 गहरी विभावरी शीत की 470
256 तुम्हारे काम तुम्हारे नाम 471
257 घट बाँहों के उलटे, ढलके 471
258 चाहो जितना,
करो करद तुम 472
259 सरल न हुए
न छुए वे चरण 472
260 शीत की गहरी विभावरी 473
261 इमन बजा 473
262 उन्मेष, देश, जन 474
263 डमड डम डमम डम 474
264 फूलों के दीपों की माला 475
265 तुम आओ, सुहाओ,
हमारी गली 476
266 तुम्हारे आँगन में छाये 476
267 बाँध दो बाँध
तटिनी के तट 477
268 तुम्हारी छाँह,
तुम्हारी बाँह 477
269 तुम्हारे आसरे,
हारे हुए··· 478
270 हुआ जो काव्य का सिंचन 478
271 पहले के गीत जानूं 479
272 छाया के दृश्यों से उतरे 479
273 कैसे आँखों को
परिसर दे ? 480
274 किसी के सामने आये··· 481
275 शंकर शुभङ्कर हुए··· 481
276 छन-छन छल-छल
जीवन प्रतिपल 482
277 सहज फूले फले उपवन 482
278 मेटिनी वाली वारी दे
वारी धना 483
279 हाथ वीणा, समासीना 483
280 पत्रोत्कंठित, जीवन
का विष··· 484

परिशिष्ट

मौलिक कविताएँ

1 धिक मद, गरजे बदरवा 489
2 ताक कमसिनवारि 489
3 जगने दिया जो
न दिया जगने··· 490
4 निपट कपट तुम श्याम 490
5 पनघटवा गारि दै बजुरमारे 490
6 खेलत रहलूं अगनवाँ··· 491

भूमिका

1 **अर्चना** की भूमिका 495

Scanned by TapScanner